حصن المسلم من الأمراض والأوبئة

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

باللغة الهندية

إعداد

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة

(1)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُولُ فِي صَبَاحِ كُلِّ يَوْمٍ وَمَسَاءِ كُلِّ لَيْلَةٍ: بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ؛ فَيَضُرُّهُ شَيْءٌ» [صحيح ابن ماجه: 3134]

وفي رواية: «مَنْ قَالَ: بِسْمِ اللهِ الَّذِي .... ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَمْ تُصِبْهُ فَجْأَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُصْبِحَ، وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَمْ تُصِبْهُ فَجْأَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُمْسِيَ» [صحيح أبي داود: 5088]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''जो बंदा हर दिन की सुबह को और हर रात की शाम को तीन बार यह दुआ **'बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिहि शैउन फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउ़ल अ़लीम'** (उस अल्लाह के नाम से जिस के नाम के साथ ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं दे सकती, और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है) पढ़े, उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहूँचायेगी।'' {सहीह इब्नु माजाः ३१३४}

और एक रिवायत में हैः ''जिस ने (शाम को) यह दुआ **'बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ---'** तीन बार पढ़ ली, उसे सुबह तक कोई अचानक बला (आफ़त व मुसीबत) नहीं पहूँचेगी। और जिस ने सुबह के वक़्त यह दुआ तीन बार पढ़ ली, उसे शाम तक कोई अचानक बला नहीं पहूँचेगी।'' {सहीह अबू दाऊदः ५०८८}

(2)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَالْمُعَوِّذَتَيْنِ، حِينَ تُمْسِي وَحِينَ تُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، تَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ» [صحيح الجامع: 4406]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "**सूरह इख़्लास (क़ुल् हुवल्लाहु अहद ---), सूरह फ़लक़ (क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिल् फ़लक़ ---) और सूरह नास (क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिन नास ---)** सुबह और शाम को तीन तीन बार पढ़ लो, तो यह तुम को हर चीज़ से काफ़ी हो जायेंगी।" {सहीहुल जामे': ४४०६}

(3)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ قَالَ إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ: بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، يُقَالُ لَهُ: كُفِيتَ وَوُقِيتَ، وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ» [صحيح الجامع: 6419]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ''जो व्यक्ति अपने घर से निकलते समय पढ़े: **'बिस्मिल्लाह, तवक्कलूतु अ़लल्लाह, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह'** (अल्लाह के नाम से, मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ, किसी शर्र और बुराई से बचना तथा किसी ख़ैर या नेकी का हासिल होना अल्लाह की मदद के बग़ैर मुम्किन नहीं), तो उसे कहा जाता है: तेरी किफ़ायत की गई और तुझे बचा लिया गया, और शैतान उस से दूर हो जाता है।'' {सहीहुल जामे': ६४१६}

(4)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا ثُمَّ قَالَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ، حَتَّى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذَلِكَ» [صحيح مسلم: 2708]

ख़ौला बिन्ते हकीम रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान करती हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः ‘‘जो शख़्स किसी मंज़िल में उतरे फिर कहेः **‘अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़’** (मैं अल्लाह तआ़ला के परिपूर्ण वाणी (मुकम्मल कलिमात) के ज़रीया उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह माँगता हूँ जो उस ने पैदा की हैं।), तो उस को कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहूँचायेगी यहाँ तक कि वह उस मंज़िल से कूच कर जाये।’’ {सहीह मुस्लिमः २७०८}

(5)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «مَنْ رَأَى مُبْتَلًى فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلاً، لَمْ يُصِبْهُ ذَلِكَ الْبَلاءُ»

[**صحيح الجامع**: 6248]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''जो किसी मुसीबत ज़दा (आपदाक्रांत) को देख कर कहेः **'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फ़ानी मिम्मब्तलाक बिहि, व फ़ज़्ज़लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़लक़ तफ़ज़ीला'** (सब ता'रीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझ को उस मुसीबत से बचाया जिस में उस ने तुझ को मुब्तला किया, और मुझे फ़ज़ीलत दी अपनी बहुत सारी मख़लूक़ात पर), तो उस को वह मुसीबत नहीं पहुँचेगी।'' {सहीहुल जामे': ६२४८}

(6)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُونِ وَالْجُذَامِ، وَمِنْ سَيِّئِ الأَسْقَامِ» [صحيح الجامع: 1281]

अनस बिन मालिक ﷺ बयान करते हैं कि नबी ﷺ दुआ़ किया करते थेः **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल् बरसि वल्जुनूनि वल्जुज़ामि, व मिन् सैयिइल् अस्क़ाम।"** (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बरस (चितकबरे दाग़), जुनून (पागल पन), कूढ़ और बुरी बीमारीयों से)। {सहीहुल जामे': १२८१}

(7)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ» [صحيح مسلم: 2739]

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है, उन्हों ने कहाः रसूलुल्लाह ﷺ की दुआ़ओं में से एक दुआ़ यह थीः **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् ज़वालि निअ़्मतिक, व तहव्वुलि आ़फ़ियतिक, व फ़ुजाअति निक़्मतिक, व जमीइ़ सख़तिक।"** (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ तेरी नेमत के ज़ायेल (ख़त्म) होने, तेरी आ़फ़ियत व शांति के बदलने, तेरी सज़ा के अचानक आने और तेरी सारी नाराज़गी से)। {सहीह मुस्लिमः २७३९}

(8)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «مَا مِنْ دَعْوَةٍ يَدْعُو بِهَا الْعَبْدُ أَفْضَلُ مِنْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ» [صحيح الجامع: 5703]

अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः "बंदा जो भी दुआ माँगता है वह इस दुआ से अफ़ज़ल नहीं होतीः **'अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् मुआफ़ात फ़िद्दुनया वल्आख़िरह्'** (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत व शांति का सवाल करता हूँ)।" {सहीहुल जामे': ५७०३}

(9)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «دَعْوَةُ ذِي النُّونِ إِذْ دَعَا وَهُوَ فِي بَطْنِ الْحُوتِ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَدْعُ بِهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلَّا اسْتَجَابَ اللهُ لَهُ» [صحيح الترغيب: 1644]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''ज़िन्नून (यूनुस عليه السلام) की दुआ जो उन्हों ने मछली के पेट में की थीः **'ला इलाह इल्ला अनूत सुब्हानक इन्नी कुनूतु मिनज़्ज़ालिमीन'** (नहीं है कोई सच्चा मा'बूद मगर तू, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में से हूँ), जो कोई मुस्लिम शख़्स इस के द्वारा किसी भी विषय में दुआ करेगा, अल्लाह उसे क़बूल फ़रमायेगा।'' {सहीहुत तर्ग़ीबः १६४४}

इब्नुल क़ैइम रहेमहुल्लाह ने फ़रमायाः कठोर से कठोर मुसीबत तौहीद जैसे विषय से टल जाती है। इसी लिए मुसीबत की दुआ तौहीद के साथ आई है। और ज़िन्नून की तौहीद वाली उक्त दुआ जो मुसीबत ज़दा शख़्स करेगा, अल्लाह तआला उस की मुसीबत को दूर फ़रमायेगा। {अल्फ़वाइदः ६६}

(10)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ» [صحيح البخاري: 6616]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''अल्लाह की पनाह माँगोः **'अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन् जह्दिल् बला, व दरकिश् शक़ा, व सूइल् क़ज़ा, व शमाततिल् अअ्दा'** (मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ आज़माइश की सख़्ती से, और बद् बख़्ती के पाने से, और बुरे फ़ैसले से, और दुश्मनों के हँसने से)।'' {सहीह बुख़ारीः ६६१६}

(11)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ أَنَّهُ قَالَ لأَبِيهِ: يَا أَبَتِ إِنِّي أَسْمَعُكَ تَدْعُو كُلَّ غَدَاةٍ: «اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ» تُعِيدُهَا ثَلاَثًا حِينَ تُصْبِحُ، وَثَلاَثًا حِينَ تُمْسِي، فَتَدْعُو بِهِنَّ. فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَدْعُو بِهِنَّ، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَسْتَنَّ بِسُنَّتِهِ. [صحيح أبي داود: 5090]

अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्रा से रिवायत है कि उन्हों ने अपने बाप से कहा: ऐ अब्बाजान! मैं आप को रोज़ाना यह दुआ़ करते सुनता हूँ: **'अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म अ़फ़िनी फ़ी समूई, अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त। अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल्फ़क़्रि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्रि, ला इलाह इल्ला अन्त'** (ऐ अल्लाह! मुझे मेरे बदन में आ़फ़ियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों में आ़फ़ियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आँखों में आ़फ़ियत दे। तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! मैं कुफ़्र और मुहताजगी से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! क़ब्र के अज़ाब से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं)। आप सुबह को तीन मर्तबा और शाम को भी तीन मर्तबा पढ़ कर इन शब्दों के ज़रीया दुआ़ करते हैं। तो उन्हों ने कहा: मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को इन अल्फ़ाज़ के ज़रीया दुआ़ करते सुना है, इस लिए चाहता हूँ कि मैं आप की सुन्नत की इक़्तिदा और पैरवी करूँ। {सहीह अबू दाऊद: ५०९०}

(12)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ يَدَعُ هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ، حِينَ يُمْسِي وَحِينَ يُصْبِحُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي. اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي» [صحيح الكلم الطيب: 27]

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान फ़रमाते हैं कि नबी ﷺ हमेशा सुबह और शाम को इन कलिमात के ज़रीया (शब्दों द्वारा) दुआ़ किया करते थेः **'अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् आ़फ़ियत फ़िद्दुन्या वल्आख़िरह, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्व वल्आ़फ़ियत फ़ी दीनी व दुन्याय व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती व आमिन रौआ़ती, अल्लाहुम्महफ़्ज़नी मिम्बैनि यदैय, व मिन ख़ल्फ़ी, व अ़न यमीनी, व अ़न शिमाली, व मिन फ़ौक़ी, व अऊ़ज़ु बिअ़ज़मतिक अन् उग़्ताला मिन तह्ती।'** (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने माल में माफ़ी तथा आ़फ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दा वाली चीज़ों पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को अम्न में रख। ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दायें तरफ़ से, मेरी बायें तरफ़ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त कर। और मैं इस बात से तेरी अ़ज़मत व बड़ाई की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ।)।'' {सहीहुल कलिमित तैइबः २७}

(13)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللهِ» [صحيح مسلم: 657]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ‘‘जिस ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी वह अल्लाह की पनाह और उस के हिफ़्ज़ व अमान में है।’’ {सहीह मुस्लिमः ६५७}

(14)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ» [صحيح البخاري: 5009، وصحيح مسلم: 808]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "जिस ने सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ लीं, वह उसे हर आफ़त से बचाने के लिए काफ़ी हो जायेंगी।" {सहीहुल बुख़ारीः ५००६, सहीह मुस्लिमः ८०८}

इमाम नववी रहेमहुल्लाह ने फ़रमायाः काफ़ी हो जायेंगी का मतलबः १- कहा गयाः तहज्जुद की नमाज़ की तरफ़ से। २- शैतान से बचाने के लिए। ३- आफ़त से बचाने के लिए। ४- मुम्किन है मज़्कूरा तमाम चीज़ों से। {नववी रचीत सहीह मुस्लिम की शर्ह}

(15)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ الشَّيْطَانَ قَالَ لَهُ: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَاقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ، مِنْ أَوَّلِهَا حَتَّى تَخْتِمَ الآيَةَ ﴿اللَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ وَقَالَ لِي: لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ حَافِظٌ، وَلاَ يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ، وَكَانُوا أَحْرَصَ شَيْءٍ عَلَى الْخَيْرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «أَمَا إِنَّهُ قَدْ صَدَقَكَ وَهُوَ كَذُوبٌ» [صحيح الترغيب: 610]

अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं कि शैतान ने उन से कहाः जब बिस्तर पर लेटो तो आयतुल कुर्सी **'अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् हैयुल् क़ैयूम'** शुरू से आख़िर तक पढ़ लो। उस ने मुझ से यह भी कहाः अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तुम पर (इस के पढ़ने से) एक निगराँ फ़रिश्ता मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे क़रीब भी नहीं आ सकेगा। और सहाबा ख़ैर को सब से आगे बढ़ कर लेने वाले थे। नबी करीम ﷺ ने (उन की यह बात सुन कर) फ़रमायाः "अगरचे वह झूटा था, लेकिन यह बात तुम से सच कह गया है।" {सहीहुत तर्ग़ीबः ६१०}

(16)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «الدُّعَاءُ يَنْفَعُ مِمَّا نَزَلَ، وَمِمَّا لَمْ يَنْزِلْ، وَإِنَّ الْبَلَاءَ لَيَنْزِلُ، فَيَتَلَقَّاهُ الدُّعَاءُ، فَيَعْتَلِجَانِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» [**حسن. صحيح الجامع**: 7739]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ‘‘जो आफ़त नाज़िल हुई है और जो नाज़िल नहीं हुई है, दुआ़ दोनों से फ़ायदा देती है। और जब बला-मुसीबत नाज़िल होती है, तो दुआ़ उस से मुलाक़ात करती है। पस दोनों क़ियामत दिवस तक झगड़ते रहेंगे।’’ {हसन, सहीहुल जामे‘: ७७३६}

(17)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِينَ قَبْلَكُمْ، وَقُرْبَةٌ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الإِثْمِ، وَتَكْفِيرٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَطْرَدَةٌ لِلدَّاءِ عَنِ الْجَسَدِ» [صحيح الجامع: 4079]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ‘‘तुम तहज्जुद की नमाज़ को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि यह तुम से पहले नेक लोगों की आ़दत रही है, नीज़ यह अल्लाह तआ़ला की क़ुरबत का ज़रीया है, पाप से रोकने वाली है, गुनाहों को मिटाने वाली और जिस्म से बीमारी को दूर करने वाली है।’’ {सहीहुल जामे‘: ४०७६}

(18)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «صَنَائِعُ الْمَعْرُوفِ تَقِي مَصَارِعَ السُّوءِ وَالآفَاتِ وَالْهَلَكَاتِ، وَأَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الدُّنْيَا هُمْ أَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الآخِرَةِ»

[**صحيح الجامع**: 3795]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''भले और नेकी के काम बुराई, आफ़त व मुसीबत और हलाकत व बर्बादी से बचाते हैं। और दुनिया में भलाई करने वाले लोग ही आख़िरत में भलाई पाने वाले हैं।'' {सहीहुल जामे': ३७६५}

(19)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «غَطُّوا الإِنَاءَ، وَأَوْكُوا السِّقَاءَ، فَإِنَّ فِي السَّنَةِ لَيْلَةً يَنْزِلُ فِيهَا وَبَاءٌ، لاَ يَمُرُّ بِإِنَاءٍ لَيْسَ عَلَيْهِ غِطَاءٌ، أَوْ سِقَاءٍ لَيْسَ عَلَيْهِ وِكَاءٌ، إِلاَّ نَزَلَ فِيهِ مِنْ ذَلِكَ الْوَبَاءِ» [صحيح مسلم: 2014]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ‘‘बर्तनों को ढाँप दो, और पानी के बर्तन को बंद कर दो। क्योंकि साल में एक रात के अंदर वबा (आपदा) नाज़िल होती है, वह जब खाने पीने के खुले बर्तन पर से गुज़रती है, तो उस में वह वबा दाख़िल हो जाती है।’’ {सहीह मुस्लिमः २०१४}

(20)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ ﷺ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ﷺ خَرَجَ إِلَى الشَّامِ، فَلَمَّا جَاءَ بِسَرْغٍ، بَلَغَهُ أَنَّ الْوَبَاءَ وَقَعَ بِالشَّامِ، فَأَخْبَرَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلَا تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا، فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ» فَرَجَعَ عُمَرُ مِنْ سَرْغٍ.

[صحيح البخاري: 6973]

अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ﷺ से रिवायत है कि उ़मर बिन ख़त्ताब शाम (सीरीया) की तरफ़ निकले। पस जब सर्ग़ नामी मक़ाम पर पहुँचे, तो उन को यह ख़बर मिली कि शाम वबाई बीमारी की लपेट में है। फिर अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है: ''जब तुम्हें मालूम हो कि किसी सरज़मीन में वबा फैली हुई है, तो उस में दाख़िल मत हो, लेकिन अगर किसी जगह वबा फूट पड़े और तुम वहीं मौजूद हो, तो वबा से भागने के लिए तुम वहाँ से निकलो भी मत।'' चुनाँचि उ़मर ﷺ सर्ग़ से वापस आ गये। {सहीह बुख़ारी: ६९७३}

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف: ٠١١٤٤٥٤٩٠٠ - للتواصل: ٠٥٦٩٣٧٤٩٨٦

OFFICERABWAH